शोध-सारांश

हिंदी साहित्य में भी आदिकाल से आधुनिककाल तक प्रेम सौन्दर्य वर्णन की प्रधानता रही है। प्रत्येक भाषा के साहित्य के उद्भव से लेकर अब तक सभी भाषा और सभी साहित्यिक रचनाओं में 'प्रेम-तत्व' न्यूनाधिक मात्रा में दिखलाई पड़ता है। पाश्चात्य साहित्य में होमर, वर्जिल, दांते, गेटे, वर्डसवर्थ, कीट्स, शैली आदि प्रेम के मूर्धन्य कवि हुए हैं। प्रेम का वर्णन सभी कवियों को प्रिय रहा है जोकि स्वभाविक भी है, क्योंकि श्रोताओं पर अपनी कलम के प्रभाव को देखकर प्रत्येक कलाकार को आनंदानुभूति होती है। यही कारण है कि सभी कलाकारों, कवियों, चित्रकारों ने सर्वसाधारण के मन को रोमांचित करने वाली तथा जीवन को सार्थक बनाने वाले 'प्रेम' को अपने-अपने माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

शमशेर-काव्य की मूल प्रेरणा भी प्रेम है। शमशेर के काव्य को समझने के उपरांत ऐसा महसूस होता है कि प्रेम के अंतर-बाह्य रूप और आदर्श का निर्माण करने के लिए शमशेर आजीवन व्याकुल रहें हैं। शमशेर प्रेम के क्षेत्र में पूर्वकालीन तथा समकालीन साहित्यकारों से सर्वथा हटकर हैं क्योंकि शमशेर न केवल प्रेम के प्रेमी हैं बल्कि उन्होंने प्रेम को अपना दर्शन भी माना है। शमशेर के निगाह में प्रेम ही व्यष्टि, समष्टि और मानवता की संपूर्ण समस्याओं के समाधान का मंत्र है। शमशेर का प्रेम फ़लक बड़ा व्यापक है। उनके प्रेम को प्रणय या दाम्पत्य में सीमित न करते हुए बल्कि उसके समग्र, व्यापक और उदाद्त आयामों को ग्रहण किया जाता है। इसलिए राष्ट्र के प्रति, मानवता के प्रति, प्रकृति के प्रति, आदि तरह का प्रेम उनके काव्य में दर्शाया जाता रहा है।

शमशेर की कविता जीवन के सहज उल्लास और अचानक उभरते विषाद के बीच अपने को पा लेने और अचानक खो देने की कविता है। अनुभूति के सहज उच्छलन में अपने को विलीन कर देने वाली यह कविता व्यक्ति-रूप में मनुष्य के जीवन और जगत-रूप में समाज की चिंता करने वाली यह कविता है जिसमें कोई फांक नहीं है इनके काव्य की सबसे बड़ी उपलब्धि विशेषत: उनके प्रेम की अभिव्यक्ति है। स्वयं मुक्तिबोध जो शमशेर के समानांतर कवि थे।

उन्होंने उनके विषय में लिखा है कि, "शमशेर प्रणय जीवन का प्रसंगबद्ध रसवादी कवि है।" स्वयं शमशेर ने अपने कविता के प्रति यह स्वीकारा है। वे लिखते है कि "यह मेरी कविता की दुनियां के बारें में जिसमें मैं साँस लेता हूँ सिर्फ़ कह सकता हूँ कि वह निर्मल और सुंदर और सहज प्रेम की दुनिया है।"

मेरे लघु शोध का विषय 'शमशेर के काव्य में प्रेम का स्वरूप' है। प्रथम अध्याय का शीर्षक 'प्रेम की अवधारणा' है। इस अध्याय में प्रेम के स्वरूप, व्युत्पत्ति, परिभाषा और वर्तमान समय में प्रेम की अवधारणा पर चर्चा की गई है। भारतीय वाङमय में प्रेम को आदिकाल से पहचान मिली है। हालांकि हर युग में परिस्थिति के अनुसार प्रेम का बाह्य स्वरूप बदलता रहा है, किंतु उसका मूल रूप आज भी साहित्य के लिए प्राण है। वर्तमान समय में प्रेम की अवधारणा बदली तो प्रेम की परिभाषा में भी बदलाव हुआ है अतः इस अध्याय में वर्तमान समय में प्रेम में आ रहे बदलाव की भी पड़ताल मैंने की है। दूसरे अध्याय 'शमशेर का व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व : एक परिचय' में वस्तुनिष्ठ दृष्टि से उन प्रश्नों पर विचार किया गया है, जो सीधे-सीधे मेरे शोध विषय से संवाद करते हैं। इस अध्याय में शमशेर के व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व पर बात की गई है। इसके पश्चात् उनके कृतित्त्व की चर्चा की गई है साथ ही उनके द्वारा पत्रिका के संपादन के रूप मे किए गए कार्यों और प्राप्त पुरस्कारों का विवरण भी दिया गया है। तृतीय अध्याय 'शमशेर के काव्य में प्रेम के विविध स्वरूप' में शमशेर के प्रेम के चार स्वरूपों पर विचार किया गया है। शमशेर की कविताओं में प्रेम भावना के प्रति निरंतरता है। आदि से लेकर अंत तक वे प्रेम में पूर्णता प्राप्ति की ओर अग्रसर रहे। इस अध्याय में उनका राष्ट्र प्रेम, प्रकृति प्रेम, मानवीय प्रेम आदि पर प्रकाश डाला गया है।

चतुर्थ अध्याय 'शमशेर के काव्य का शिल्प' है। इसमें उनकी गज़ल, रुबाई, सॉनेट और छंद को आधार बनाकर उनके काव्य का शिल्पगत वैशिष्ट्य को विश्लेषित किया गया है।

प्रबंध के अंत में उपसंहार के अंतर्गत शोध का निष्कर्ष दिया गया है तत्पश्चात संदर्भ में पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं तथा सहायक कोषों की सूची दी गई है।